अनुमान प्रमाण

चार्वाक दर्शन को छोड़कर सभी भारतीय दर्शनों ने इसे 'प्रमाण' के रूप में स्वीकार किया है। यह प्रत्यक्ष के बाद आने वाला प्रमाण है।

शाब्दिक अर्थ → अनुमान दो शब्दों से बना है - अनु + मान। इनमें अनु का अर्थ है - 'पश्चात', तथा 'मान' से तात्पर्य हुआ - 'ज्ञान'। अतः अनुमान पश्चात् ज्ञान है। दूसरे शब्दों में पूर्वज्ञान के पश्चात् होने वाला ज्ञान 'अनुमान' है।

परिभाषा → "तत्पूर्वकमनुमानम्"। महर्षि गौतम ने न्यायसूत्र (1/1/5) में अनुमान को 'तत्पूर्वकम्' अर्थात् पूर्व ज्ञान के पश्चात् होने वाला ज्ञान बताया है।

किंतु गौतम ने पूर्वज्ञान क्या है यह स्पष्ट नहीं किया है। इसकी विस्तार से व्याख्या वात्सायन ने की है। वात्सायन के अनुसार, अनुमान में 'पूर्वज्ञान' का तात्पर्य पूर्व-प्रत्यक्ष है। अर्थात् यह प्रत्यक्ष पर आधारित ज्ञान है। इसलिए इसे - 'सापेक्ष ज्ञान' भी कहा जाता है।

उदाहरण → दूर पर्वत से हम धुँआ उठते देखते हैं यह प्रत्यक्ष है। इस आधार पर हमें ज्ञान होता है कि पर्वत पर आग है, यही अनुमान है। यह सिद्धि जिस प्रमाण के द्वारा हुई वह अनुमान प्रमाण है।

(अ) अनुमान के तीन वाक्य → अनुमान होने के लिए चिन्ह, साध्य एवं पक्ष ये तीन वाक्यों का होना आवश्यक होता है।

(i) पक्ष → यह अनुमान का वह अंग है, जिसके सम्बन्ध में अनुमान किया जाता है। जैसे कि - 'पहाड़' पक्ष है।

(ii) साध्य → यह अनुमान का वह अंग है, जिसे पक्ष के सम्बन्ध में सिद्ध किया जाता है, अर्थात् 'आग' साध्य है।

(iii). हेतु (चिन्ह) → इसे लिंग भी कहते हैं। जिसके द्वारा अर्थात् जिस चिन्ह द्वारा साध्य (आग) को पक्ष (पहाड़) पर होना बताया जाता है, वह 'हेतु' या 'लिंग' है। जैसे कि- धुआँ। वह चिन्ह या लिंग (हेतु) है, जिसे देख कर पहाड़ पर अग्नि होने का अनुमान किया जाता है। इसे निम्न उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं जिस पर अनुमान आधारित होता है -

पहाड़ पर आग है - (पक्ष)
क्योंकि वहाँ धुँआ है, - (चिन्ह / लिंग / हेतु)
जहाँ-जहाँ धुआँ है, वहाँ-वहाँ आग है। - (साध्य)

यह एक अनुमान है और यह अनुमान धुँआ और आग के व्याप्ति सम्बन्ध पर निर्भर है।

व्याप्ति → व्याप्ति का अर्थ है - दो वस्तुओं के मध्य आवश्यक और सामान्य सम्बन्ध। जैसे- जहाँ-जहाँ धुँआ है वहाँ-वहाँ अग्नि है। इस तर्क में धुँए को देखकर जो आग का अनुमान किया गया है, वह व्याप्ति सम्बन्ध पर ही आधारित है।

(ब) अनुमान के पाँच अवयव या अंग अर्थात वाक्य

(i). प्रतिज्ञा → इसमें जिसे सिद्ध करना है उसे बताया जाता है।

(ii). चिन्ह (हेतु) → इसके द्वारा वह कारण बताया जाता है जिस आधार पर प्रतिज्ञा की गई है। जैसे कि 'धुआँ' क्योंकि इसी के आधार पर आग के होने की प्रतिज्ञा की गई है।

(iii). उदाहरण → इसके द्वारा चिन्ह और साध्य में व्याप्ति संबंध है, इस बात की पुष्टि की जाती है। जैसे- जहाँ-जहाँ धुँआ है, वहाँ-वहाँ आग है, जैसे रसोई घर में।

(iv). उपनय → यह पक्ष (पर्वत) तथा चिन्ह के संबंध को बतलाता है, जैसे, पर्वत में धुँआ है।

(v). निगमन → प्रतिज्ञा सिद्धि के पश्चात् अंत में हम आत्मविश्वासपूर्वक जिस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, वह निगमन (निष्कर्ष) है।

यहाँ पर हम अनुमान के पाँचों अंगों को निम्न रूपों में रखा जा सकता है —

(1). पहाड़ पर आग्नि है — प्रतिज्ञा।

(2). क्योंकि पहाड़ पर धुँआ है — हेतु / चिन्ह।

(3). जहाँ-जहाँ धुँआ होता है, वहाँ-वहाँ आग होती है, जैसे कि, रसोई घर में — उदाहरण सहित व्याप्ति वाक्य।

(4). पहाड़ पर धुँआ है — उपनय।

(5). इसलिए पहाड़ पर आग्नि है — निगमन

इस प्रकार से अनुमान के तीन वाक्य एवं पंच अवयव या वाक्य का उल्लेख अनुमान के स्वार्थानुमान एवं परार्थानुमान के लिए किया जाता है। इनमें से वह अनुमान जो अपने लिए (स्वार्थानुमान) में किया जाने वाला वाक्य है - पक्ष, साध्य और चिन्ह (हेतु)। तथा जहाँ दूसरों को समझाने के लिए अनुमान किया जाता है उसे परार्थानुमान कहते है। इसमें अनुमान को पाँच अंगों या वाक्यों में प्रकट करते हैं —

(1) प्रतिज्ञा, (2) हेतु (लिंग), (3) उदाहरण या व्याप्ति वाक्य, (4) उपनय, तथा (5). निगमन।